फुलस्टॉप लगाने के लिए धारणायें :-

1. ड्रामा में जो कुछ हो रहा है वह सब कल्याणकारी है, एक्युरेट हो रहा है। संगमयुग है ही अच्छे ते अच्छा।
2. छोटी बात को बड़ा नहीं, बड़ी बात को छोटा बनाओ।
3. बनी बनाई बन रही है, नथिंग न्यू की स्मृति रहे।
4. दूसरों को न देखें, सबका अपना-अपना पार्ट है, सभी अपना-अपना भाग्य बना रहे हैं।
5. रूप को न देख रूह को देखने का अभ्यास करना है।
6. अपने विचारों की गति को धीमा बनायें, विचारों को महान बनायें
7. आत्मिक स्थिति में रहने व आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करना है।
8. सर्व के प्रति शुभ भावना व शुभ कामना बनी रहे।
9. मन्सा,वाचा,कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क में पवित्रता को बढ़ाते रहें।
10. अनुमान की बीमारी, परचिन्तन, परदर्शन, परमत से मुक्त रहकर अन्तर्मुखता को बढ़ाना है।
11. ज्ञान, गुण, शक्तियों का फुलस्टॉक रहे तो सहज ही फुलस्टॉप लगा सकते हैं।
12. बाबा मेरे साथ है, अपने सारे बोझ बाबा को दे दें, बाबा को यूज करें।
13. आत्मविश्वास के साथ सत्यता की शक्ति को साथ रखें।
14. करावनहार बाप है, सेवा बाबा को समर्पित करें।
15. एकान्त में बैठ अपने आप से व बाबा से बातें कर आत्मा में बल भरना है।
16. याद रहे बात बड़ी या बाप बड़ा।
17. तीन बिन्दीयों को याद करें। मैं आत्मा बिन्दी, बाबा बिन्दी, ड्रामा बिन्दी।
18. श्रेष्ठ स्मृति रहे कि अब घर चलना है फिर राज्य में आना है तो पास्ट भूल जाएगा।
19. वर्तमान में जीएं, परमात्म प्राप्तियों को याद करें।
20. मैं महान आत्मा हूं, मास्टर सर्वशक्तिवान हूं, मैं मन का मालिक हूं, इस नशे में रहें।
21. मैं विश्व की स्टेज पर पार्ट बजा रहा हूं, सारे विश्व की आत्मायें मुझे देख रही हैं।
22. आवश्यकता से अधिक इच्छाओं का त्याग करें।
23. बाबा को साथी बनाएं, साक्षीपन की स्थिति बनी रहे।
24. दिन में पांच बार अपने फरिश्ते व देवताई स्वरूप को देखें।
25. अपने मन को समझाएं है कि परमात्मा से अतिन्द्रिय सुख का अनुभव अभी नहीं किया तो कब करेंगे।
26. अमृतवेले को शक्तिशाली बनाएं, ट्रॉफिक कन्ट्रोल मिस न करें।
27. मन्सा सेवा द्वारा सकाश देने में मन को बिजी रखने के अभ्यासी बनें।
28. मुरली के विभिन्न प्वाइंटस पर मनन चिन्तन कर बुद्धि को हल्का रखें।
29. डॉट और नॉट की स्मृति रहे।
30. कर्म करते बार-बार ड्रिल करते रहें।

परमात्म याद की दृष्टि द्वारा सेवा :-

दृष्टि से अशान्त आत्माओं के संकल्प शान्त हो जाएंगे।
दृष्टि से अनेक आत्मायें अपने भाग्य व भविष्य का साक्षात्कार करेंगे।
दृष्टि से अनेक बीमारियां ठीक हो जाएंगी, दर्द कम हो जाएगी।
दृष्टि से अनेक आत्मायें निहाल हो जाएंगी, मन से हल्की हो जाएंगी।
दृष्टि से आत्माओं की अशुद्ध वृत्तियां बदलकर शुद्ध हो जाएंगी।
दृष्टि से आत्माओं को मुक्ति का वरदान मिल जायेगा।
दृष्टि से दोनों आंखें बल्ब के समान दिखाई देंगी, शरीर दिखाई ही नहीं देगा।
दृष्टि से आत्माएं अपने को भरपूर अनुभव करने लगेंगी, तृप्त हो जाएंगी।
दृष्टि से आत्माएं प्रभू प्यार की पालना का अनुभव करने लगेंगी।
दृष्टि से कमजोर आत्माएं अपने को शक्तिशाली अनुभव करने लग जाएंगी।
दृष्टि से निराश आत्माओं की जीवन उमंग-उत्साह वाली बन जाएगी।
दृष्टि से दु:खी आत्मायें सुख, शान्ति का अनुभव करने लगेंगी।
दृष्टि से देह से न्यारे होने का अनुभव होने लगेगा।
दृष्टि से लौकिकता समाप्त होकर जीवन में अलौकिकता, रूहानियत भर जाएगी।
दृष्टि अनेक आत्माओं के भाग्य का उदय कर देगी, भाग्यवान बना देगी।

दृष्टि को शक्तिशाली बनाने के लिए धारणाएं :-

लंबे समय से आत्मिक स्थिति और दृष्टि का अभ्यास बढ़ाते रहना है।
एकाग्रता की शक्ति बढ़ाने को स्वमान का अभ्यास करते रहना है।
मन्सा-वाचा-कर्मणा, संबंध-संपर्क में संपूर्ण पवित्रता की अनुभूति में रहें।
कर्म करते भी योगयुक्त स्थिति बनाए रखें।
हर आत्मा के प्रति, प्रकृति के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना बनी रहे।

बायब्रेशन द्वारा सेवा :-

शुद्ध व पवित्र बायब्रेशन से लोगों के डिप्रेशन, टेन्शन समाप्त हो जाएंगे।
शुद्ध व पवित्र बायब्रेशन से सेवास्थान निर्विघ्न हो जाएगा, सेवा बढ़ती जाएगी।
शुद्ध व पवित्र बायब्रेशन से भूत, प्रेत, जंत्र-मंत्र असर नहीं करेंगे।
शुद्ध व पवित्र बायब्रेशन विनाश के बायब्रेशन को रोक देंगे।
शुद्ध व पवित्र बायब्रेशन अनेक विघ्नों से हमारी सुरक्षा करेंगे, सेफ्टी का साधन बन जाएंगे।
शुद्ध व पवित्र बायब्रेशन से दूसरों की हिंसक वृत्ति बदल जाएगी।
शुद्ध व पवित्र बायब्रेशन से हिंसक जानवर भी समीप नहीं आएंगे।
शुद्ध व पवित्र बायब्रेशन से प्रकृति भी सहयोगी बन जाएगी, कार्य सहज होने लग जाएंगे।
शुद्ध व पवित्र बायब्रेशन से हमारे पास से गुजरने वाले की वृत्ति भी शुद्ध व पवित्र हो जाएगी।

शुद्ध बायब्रेशन के लिए धारणाएं :-

श्रेष्ठ स्वमान का अभ्यास, अच्छे-अच्छे संकल्प लिखें, अच्छा योग करें, अच्छी पवित्रता हो।

याद रहे कि शुद्ध व शक्तिशाली बायब्रेशन बहुत जल्दी फैलते हैं।
वनस्पति, प्रकृति, जीव, जंतू, सब पर बायब्रेशन का सीधा असर पड़ता है।,
जैसे अगरबती से बदबू समाप्त हो जाती है ऐसे हमारे बायब्रेशन दूसरों की गंदगी समाप्त कर देंगे।
प्रकृति हमारे बायब्रेशन तुरन्त ग्रहण करती है। जो हम खाते-पीते हैं उसे दृष्टि देकर ग्रहण करना है।

सुख, शान्ति का आधार संपूर्ण पवित्रता

मैं परम पवित्र आत्मा हूँ – यह ब्राह्मणों का स्वमान है।
पवित्र भव, योगी भव – ब्राह्मण जीवन का पहला वरदान है।
पवित्र जीवन – बापदादा द्वारा प्राप्त वरदानी जीवन है।
पवित्र आत्मायें जहान के नूर हैं।
पवित्रता ब्राह्मण जीवन का जीयदान है।
पवित्रता ब्राह्मण जीवन का स्वधर्म है।
पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है।
पवित्रता ब्राह्मण जीवन का जन्मसिद्ध अधिकार है।
पवित्रता ब्राह्मण जीवन का आहार, व्यवहार है।
पवित्रता ब्राह्मण जीवन की विशेषता है।
पवित्रता ब्राह्मण जीवन की नवीनता है।
पवित्रता ब्राह्मण जीवन की चमक है।
पवित्रता ब्राह्मण जीवन का आदि, अनादि स्वरूप है।
पवित्रता ब्राह्मणों का सबसे पहला अधिकार है।
पवित्रता ब्राह्मणों का निजी संस्कार है।
पवित्रता संगमयुग की प्रॉसपर्टी है।
पवित्रता विश्व परिवर्तन का आधार है।
पवित्रता भविष्य 21 जन्मों का फाउण्डेशन है।
पवित्रता सुख, शान्ति की जननी है।
पवित्रता अन्धकार को मिटाती है।
पवित्रता से ही रॉयल्टी आती है।
पवित्रता सन्तुष्टता का अनुभव कराती है।
पवित्रता की ही मान्यता, महानता है।
पवित्रता की धारणा ही धर्मसत्ता है।
पवित्रता ही स्वच्छता, श्रेष्ठता है।
पवित्रता की दुआ में बहुत बड़ी शक्ति है।
पवित्रता, पवित्रता को खींचती है।
पवित्रता लगाव व झुकावमुक्त बनाती है।
पवित्रता ईष्ट देव और अष्ट देव बनाती है।
पवित्रता प्रकृति को भी पावन बनाती है।
पवित्रता आकर्षण–मुक्त बनाती है।
पवित्रता दिनचर्या को युक्तियुक्त बनाती है।
पवित्रता सिद्धि स्वरूप सहज बनाती है।
पवित्रता महान, होलीहंस बनाती है।
पवित्रता सर्वशक्तियों से संपन्न बनाती है।
पवित्रता विशेष आत्मा, सफल तपस्वी बनाती है।
पवित्रता हर्षितचित्त, जीवनमुक्त बनाती है।
पवित्रता सच्चा हीरा, मायाजीत बनाती है।
पवित्रता सदा के लिए प्रसन्नचित्त बनाती है।
पवित्रता पूज्यात्मा, सत्यस्वरूप बनाती है।
पवित्रता रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड बनाती है।
पवित्रता सुखमय जीवन बनाती है।
पवित्रता बापदादा के दिलतख्तनशीन बनाती है।
पवित्रता विकारों में जलती आत्माओं को शीतल बनाती है।
पवित्रता विश्व के जड़, चैतन्य सबको पवित्र बनाती है।
पवित्रता की शक्ति नेत्रहीन को तीसरा नेत्र देती है।
पवित्रता सारे सृष्टि रूपी मकान को गिरने से थमाती है।
पवित्रता दुःख, अशान्ति से मुक्त बनाती है।
पवित्रता लाइट का क्राउन पहनाती है।
पवित्रता की सबसे बड़ी स्टेज है – ऑनेस्ट रहना।
पवित्रता मुख पर मुस्कराहट लाती है।
पवित्रता रूहानी खुशबू का अनुभव कराती है।
पवित्रता से चेहरे पर रूहानियत की झलक आती है।
पवित्रता बाप के समीपता का अनुभव कराती है।
पवित्रता सर्व हद की कामनाओं पर जीत दिलाती है।
पवित्रता माया के विघ्नों से बचने की छत्रछाया है।
पवित्रता याद वा सेवा की सफलता का आधार है।
पवित्रता कर्म की गति और विधि का आधार है।
पवित्रता सदा के लिए सर्व प्राप्तियां कराने वाली है।
पवित्र दृष्टि शक्तिशाली बनाती है।
पवित्रता की पर्सनैलिटी सब के सिर झुकाती है।
पवित्रता के आधार से ही भविष्य के लिए नंबर मिलते हैं।
पवित्रता के आधार पर सत्यता का स्वरूप स्वतः सिद्ध होता है।
पवित्रता से सारे विश्व की अपवित्रता को समाप्त कर सकते हैं।
पवित्रता का सम्पूर्ण स्वरूप है ब्रह्मचारी व ब्रह्माचारी बनना।
पवित्रता की शक्ति से किसी भी आत्मा की दृष्टि, वृति और कृति को बदल सकते हो।
पवित्र संकल्प से अपवित्र संकल्प वाली आत्मा को परखकर उसे परिवर्तन कर सकते हो।
पवित्रता की अग्नि सेकंड में विश्व के किचड़े को भस्म करती है।

पवित्रता बढ़ाने के लिए स्लोगन याद रहे - न बुरा देखो, न बुरा सुनो, न बुरा सोचो, न बुरा बोलो और न बुरा करो। **अभ्यास करें** - आत्म-अभिमानी बनो। आत्मिक दृष्टि बनायें। अशरीरीपन की ड्रिल करें। मैं सम्पूर्ण निर्विकारी आत्मा हूँ, अवतरित फरिश्ता हूँ, अपने देवताई स्वरूप को इमर्ज करें।

ओम् शान्ति

कैसे बीत रहे हैं संगमयुग के अनमोल पल ?

1. संगमयुग के सुहाने पल भगवान से बातचीत करने में बीत रहे हैं?
2. संगमयुग भगवान के साथ का अनुभव करने में बीत रहा है?
3. संगम की अनमोल घड़ियां भगवान से मिली सर्वशक्तियों को विश्वकल्याण के कार्य में लगाने में बीत रही हैं?
4. अतिन्द्रिय सुख में रहकर औरों को सुख का अनुभव करा रहे हैं?
5. ज्ञान रतनों से खेलने में, मनन चिन्तन में बीत रहा है?
6. देह से न्यारे, अशरीरी, देही अभिमानी स्थिति बनाने में बीत रहा है?
7. दु:खी, अशांत, भटकती, तड़फती, रोगी, विकारी आत्माओं को पवित्रता, सुख, शांति देने में बीत रहा है?
8. प्रकृति के पांचों तत्वों, सभी ग्रहों को पावन बनाने में बीत रहा है?
9. व्यर्थ से मुक्त रहकर सदा समर्थ स्थिति बनाए रखने में बीत रहा है?
10. स्वमान में रहकर सबको सम्मान देने में बीत रहा है?
11. ईश्वरीय कार्य में अपना तन, मन, धन, समय, श्वांस, संकल्प सफल करने में बीत रहा है?
12. सबके प्रति शुभ कामना, शुभ भावना रखने में बीत रहा है?
13. सर्व को सहयोग, सुख देने में बीत रहा है?
14. दु:खी, असहाय, कमजोर, हीनभावना वाली आत्माओं में शक्ति भरकर आगे बढ़ाने में बीत रहा है?
15. परमात्म प्यार में लवलीन रहकर आनंदमय जीवन का अनुभव करने में बीत रहा है?
16. परमात्म शक्तियों की छत्रछाया में रहकर वायुमण्डल में सर्वशक्तियों की किरणें फैलाने में बीत रहा है?
17. अपने प्यारे रूहानी बाप से सर्व संबंधों का अनुभव करने में बीत रहा है?
18. परमात्म पढ़ाई पढ़ने - पढ़ाने में बीत रहा है?
19. सबमें गुण देखकर सर्वगुण सम्पन्न बनने में बीत रहा है?
20. सरलचित नेचर बनाकर सर्व को सरल स्वभाव बनाने की विधि बताने में बीत रहा है?
21. निरन्तर योगी बनने - बनाने की विभिन्न युक्तियों के अनुभव व प्रैक्टिस में बीत रहा है?
22. परिस्थितियों को सहज पार करने की कला द्वारा बेफिकर बादशाह की स्थिति बनाने में बीत रहा है?
23. वाणी से परे रहने के अभ्यास में बीत रहा है?
24. बेहद यज्ञ के बेहद कार्यों को निर्विघ्न बनाने में बीत रहा है?
25. जीवन को दैवीगुणों से श्रृंगारने में बीत रहा है?
26. ज्ञान के हर प्वाइंट को आचरण में लाने में बीत रहा है?
27. कर्मेन्द्रियजीत, निंद्राजीत, मायाजीत बनने में बीत रहा है?
28. त्यागवृत्ति से अपने भाग्य को श्रेष्ठ बनाने में बीत रहा है?
29. वाह रे मेरा भाग्य, वाह मेरा भाग्यविधाता बाबा के सिमरन में बीत रहा है?
30. पुरानी छी:-छी:, पतित, रौरवनर्क, भ्रष्टाचारी दुनिया से बेहद के वैराग्य में बीत रहे है?
31. बापदादा की महिमा के गीत गाने में बीत रहा है?
32. लाइट हाउस, माइट हाउस बन सकाश की किरणें निरन्तर विश्व को देने में बीत रहा है?
33. चलते-फिरते अव्यक्त फरिश्ता स्थिति से वातावरण को अव्यक्त बनाने में बीत रहा है?
34. सदा खुश रहकर सबको खुशियां ही खुशियां बांटने में बीत रहा है?
35. बाप समान प्यार का सागर बनने-बनाने में बीत रहा है?

ओम् शान्ति

चलो हम प्रभू प्यार में मग्न हो जायें

चलें हम उस प्यार के सागर शिव पिता के प्यार में मग्न हो जायें, जिसने हमारा जीवन इतना ऊंच, श्रेष्ठ पवित्र बना दिया...., उसकी याद में खो जायें जिसने हमें सर्व सम्बन्धों का प्यार अनुभव करा दिया....., चलें हम उस शिव पिता की याद में लवलीन हो जायें जिसने हमें सर्व खजानों से भरपूर किया है..., हमारे पर अनगिनत उपकार किए हैं....,हमारे सब दु:ख हर लिये हैं....., अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करवाकर हमारे जीवन को अलौकिकता से भरपूर कर दिया है...., चलें हम उसकी याद में समा जाएं जिसने हमें स्वराज्य अधिकारी बेफिक्र बादशाह बनाकर अनेक फिखरों से फारिग कर दिया....हम उसको दिल से याद करें जिसने हमारा जीवन पवित्रता से सराबोर कर दिया..., उसकी याद में मग्न हो जायें जो हमें स्वर्ग की बादशाही देने हमारे सन्मुख आ गया है..., हमारे लिये हथेली व वहिष्त की सौगात लेकर आया है....।

आओ हम उस परमसतगुरु का ध्यान कर लें जिसने हमें मुक्ति-जीवनमुक्ति की सच्ची राह दिखा दी है...., उस शिव साजन के नयनों में समा जाएं जिसने स्वयं हमें अपनी सजनी बनाया है..., उस खुदा दोस्त की याद में डूब जाएं जो हमें पग-पग पर मदद करने के लिए बधं गया है...., हम उसके प्यार में इतना खो जायें कि हर श्वास, हर सेकेण्ड उसकी याद के बिना बीते ही नहीं...। चलो हम परमप्रिय की उस मीठी, सुखदायी, न्यारी-प्यारी याद में डूब जाएं जो हमें देह और देह की दुनिया से दूर, बहुत दूर अपने स्वीटहोम तक ले जाती है.., अहा मेरे मीठे बाबा, प्यारे बाबा आपने हमारा जीवन कितना ऊंच व श्रेष्ठ बना दिया...।

चलें हम उस प्रियत्तम के साथ कम्बाइडं हो जाएं जो हमें अनेक जन्मों के लिए सर्वगुण सम्पन्न सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बना रहे हैं..., अपनी सर्वशक्तियों से हमें फुलचार्ज कर रहे हैं...।

चलें हम उसके निच्छल, निर्मल व नि:स्वार्थ प्यार के अनुभव में खो जायें....। जो हजारों भुजाओं के साथ अपनी छत्रछाया में हमारी पालना कर रहा है। उस सर्वोच्च सत्ता के नशे में स्थित हो जायें जिसने अपनी सर्वशक्तियां हमें विल कर दी हैं....। उस पार ब्रह्म में रहने वाली महाज्योति की लाइट में समा जायें... जो हमें अपनी लाइट-माइट से सदा के लिए रोशन कर देता है।

किन शब्दों से उस परमज्योति की महिमा करूं जिसने हमें स्वराज्य अधिकारी, मास्टर सर्वशक्तिवान, विश्वकल्याणकारी, स्वदर्शनचक्रधारी, विजयी रतन, विघ्नविनाशक, मास्टर दु:खहर्ता, सुखकर्ता, पूजनीय व पूर्वज आत्मा, कल्पवृक्ष के फाउण्डेशन, अपने नयनों का नूर, सन्तुष्टमणि, परम पवित्र आत्मा..., अनेकानेक टाईटिलों से हमें समर्थ स्मृतियां दिलाकर हमारे भाग्य के भण्डारे भरपूर कर दिये। वाह शिव बाबा वाह, वाह ब्रह्मा बाबा वाह, वाह हमारा श्रेष्ठ भाग्य, वाह मीठा ब्राह्मण परिवार वाह.....।

ओम् शान्ति

इन भूलों के कारण हुआ संसार का पतन

1. परमात्मा को सर्वव्यापी अर्थात् कण-कण में कहने से
2. मनुष्य जन्म 84 लाख योनियों के बाद होने की बात कहने से
3. शिव भगवानुवाच के बजाय श्रीकृष्ण भगवानुवाच कहने से
4. कल्प की आयु लाखों वर्ष कहने से
5. भगवान अवतरण के लिए युगे-युगे कहने से
6. कलियुग की आयु अभी 40 हजार वर्ष बाकी कहने से
7. जो मर्जी खाओ-पियो, आत्मा तो निर्लेप है कहने से
8. आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा कहने से
9. श्रीकृष्ण के आगमन को द्वापरयुग में कहने से
10. श्रीराम के आगमन को सतयुग में कहने से
11. श्रीकृष्ण ने गोपियों के वस्त्र चुराए, मक्खन चोरी कर खाया आदि कहने से
12. आत्मा के परमात्मा में समा जाने की बात कहने से
13. अंधश्रद्धावश अनेकों की भक्ति करने से
14. देहअभिमान वश देहधारी गुरूओं की मत पर चलने से
15. अनेक धर्मों की अनेक मतों के कारण
16. स्वयं को आत्मा के बजाय शरीर समझने के कारण
17. परमात्मा को भूलने के कारण
18. परमात्मा के ज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण
19. स्वार्थी, लालची प्रवृत्ति होने के कारण
20. माया के पांच विकारों के वशीभूत होने के कारण
21. पतित-पावन परमात्मा के बजाय पानी की गंगा को मानने से
22. आत्मिक मूल्यों के विस्मृत होने से
23. आत्मा-आत्मा, भाई-भाई का सम्बन्ध भूलने से
24. गीता का भगवान शिव की बजाए श्रीकृष्ण कहने से
25. धन-संपत्ति को माया समझने से भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, पतन हो रहा है...। आदि-आदि...।

बाबा अपने बच्चों को किस-किस चीज से भेंट करते हैं उसके कुछ उदाहरण

रतन - तुम बच्चे बहुत वैल्युबल रतन हो, ग्रहचारी उतारने को लोग अष्ट रतनों की अंगूठी पहनते हैं।

फूल - तुम बच्चे अभी खुशबूदार फूल बनते हो, दैवी गुणों की खूशबू फैलाते हो।

भ्रमरी - तुम बच्चे भ्रमरी की तरह भूं-भूं कर औरों को भी आप समान बनाते हो।

परवाने - तुम बच्चे सच्चे-सच्चे परवाने हो जो एक बाप पर फिदा हो जाते हो।

गाय - तुम बच्चे गाय की तरह ज्ञान की जुगाली अर्थात् मनन-चिन्तन करते हो।

हाथी - तुम बच्चे बड़ी-बड़ी सेवाएं करके महारथी बनते हो।

सन्यासी - अब तुम बच्चों ने पांच विकारों, पुरानी दुनिया से बेहद का सन्यास किया है।

पार्वती - तुम आत्माएं सच्ची-सच्ची शिव की पार्वतियां हों।

सीता - तुम आत्माएं निराकार राम की सच्ची-सच्ची सीताएं हो।

बुलबुल - तुम ज्ञान की टिकलू-टिकलू करने वाली बुलबुल हो।

हंस - तुम बच्चे हंस समान अवगुण रूपी कंकड़ छोड़ गुण रूपी मोती चुगते हो।

कछुआ - कछुए की तरह तुम बच्चे अपनी कर्मेन्दियां समेट लेते हो।

शेर - तुम शेरनियां हो, तुम्हें अब ललकार करनी है कि बाप आया है.....।

चात्रक - तुम चात्रक की तरह ज्ञान की एक-एक बूंद को पी जाते हो।

तोता - तुम बच्चे तोते की तरह बाप के ज्ञान को हूबहू रिपीट कर सुनाते हो।

चिड़िया - तुम ज्ञान सागर बाप के सारे ज्ञान को हप कर लेती हो।

सांप - तुम बच्चे भविष्य सतयुग में अपना शरीर स्वेच्छा से छोड़ते हो, सर्प का मिसाल है ना।

मणि - तुम बच्चे सिवाए मणि के कुछ देखो ही नहीं।

चूहा - तुम चूहे मुआफिक प्यार से फूंक मारकर आत्माओं को बाप का बनाते हो।

अजगर - ज्ञान का मनन चिन्तन करते रहे तो माया अजगर के पेट में जाने से बच जाएंगे।

भैंस - ज्ञान रतनों को नजरअंदाज कर भैंसबुद्धि नहीं बनना है।

बकरी - तुम शिवशक्तियां शेरिनयां हो, नाजुक बकरियां नहीं हो।

कबूतर - माया बिल्ली को आते देख दिव्यनेत्र बंद नहीं करना है।

कांटे - तुम्हें पुरुषार्थ में ड्रामा कहकर जंगली कांटों रूपी ख्यालात नहीं करने हैं।

पण्डा - तुम बच्चे हो सच्चे-सच्चे पण्डे, सबको मुक्ति जीवनमुक्ति का रास्ता दिखाने वाले।

आर्मी -तुम रूहानी आर्मी हो, ज्ञान-योग के अस्त्र-शस्त्र से माया पर जीत प्राप्त करते हो।

डॉक्टर - तुम रूहानी डॉक्टर हो जो आत्माओं को मनमनाभव का रूहानी इंजेक्शन लगाते हो।

और भी चिन्तन कर सकते हैं.....। **ओम् शान्ति**